



# बांकेलाल और जादूगर डांगा



**RAJ COMICS FAN NATION**

BRINGING HOME THE JUHON

बेटी





# बांकेलाल और जादूगर डांगा



चित्रांकन: बेदी  
लेखक: पपिन्द्र जुनेजा, सम्पादक: मनीष चन्द्र गुप्ता

एक रात उधमपुर का राजा उधमीसिंह अपने शयनकक्ष में बेचैनी के आलम में एहल रहा था—



...कम्बलुत ने कितनी होशियारी से दुष्ट-भूमि में मेरी निश्चित विजय को न केवल पराजय में बदल दिया था, बल्कि मुझे मजबूर कर दिया था कि मैं आजीवन-संधि का विक्रमसिंह के पास भेजूं...



बांकेलाल और राजा उधमीसिंह के विषय में जानने के लिए राज कॉमिक्स का पूर्व प्रकाशित अंक 'कह बुरा, हो भला अवश्य पढ़ें'।



तभी उधमपुर के जाने-माने जासूस चौपट और पोपट ने राजा के शयनकक्ष में प्रवेश किया—

महाराज की जय हो।  
??  
बिना इजाजत इस समय आपके शयनकक्ष में प्रवेश करने के लिये क्षमा चाहते हुए आपसे निवेदन करते हैं...



... कि आप हमें वह कारण बताएं जिसकी वजह से आपकी रातों की नींद हराम हुई है।  
हां, महाराज! कारण बताएं।  
राज-जासूसो! तुम शायद कारण जानकर भी हमारी कोई मदद न कर सको इसलिए...



... बीच में बोलने की गुस्ताखी माफ, महाराज! लेकिन हम जासूसों के जासूस पोपट, चौपट आपको परेशान नहीं देख सकते।  
जी महाराज, हम आप न देखें यह तो हो सकता है, लेकिन हम आपको तरह परेशान हाल न देख सकते हैं-हैं।



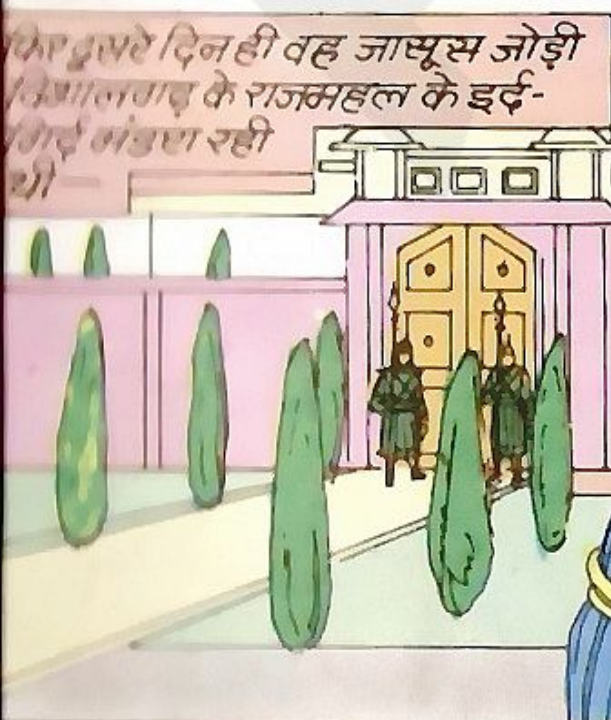
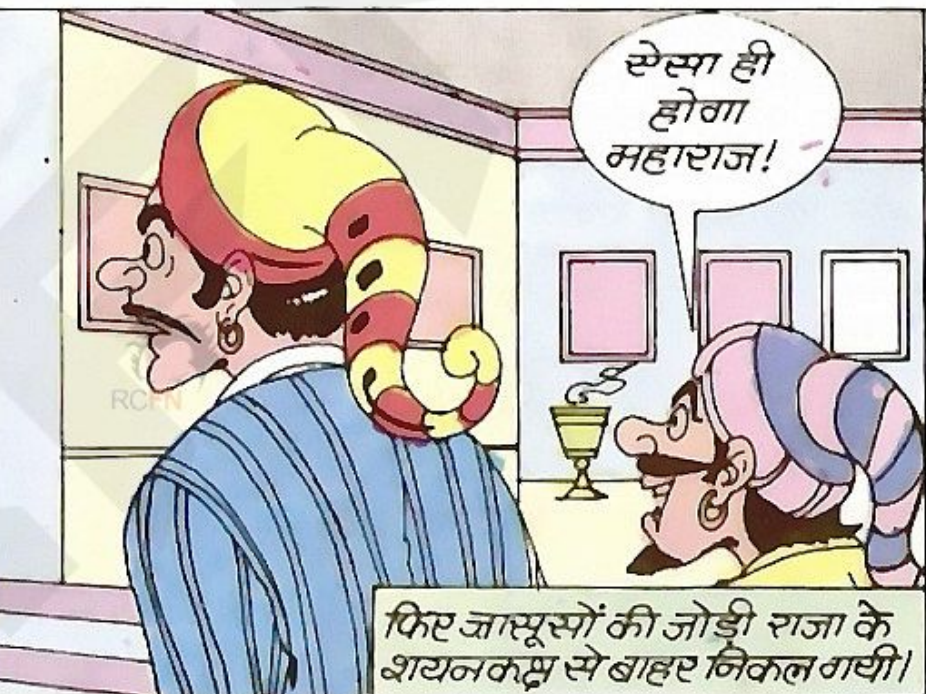
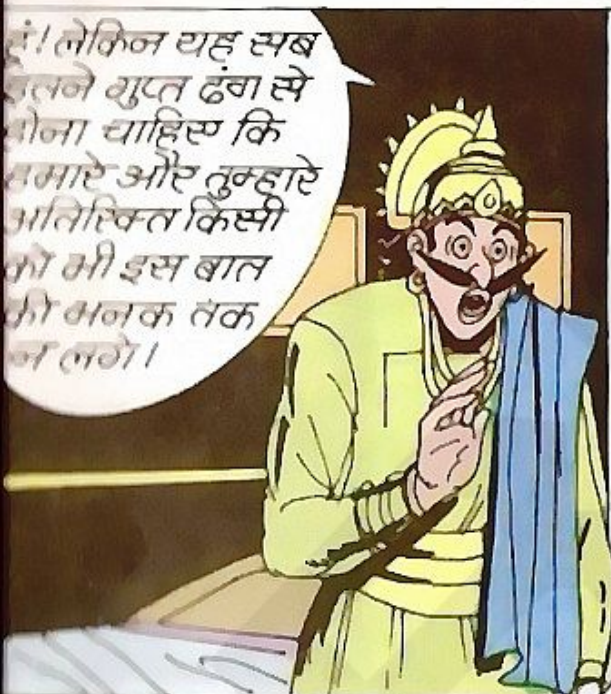
तो सुनो पोपट और चौपट, क्या तुम लोग बांकेलाल का अपहरण करके उसे यहां ला सकते हो?



ब... बांकेलाल का अपहरण?

??











फेर पुरजे पर लिखी इबारत को पढ़ते हुए  
उस बुरी तरह चौंक पड़ा—

बांकलाल! राजा विक्रमसिंह  
की जिन्दगी स्वतरे में है।  
यदि तुम उनकी मदद करना  
चाहते हो तो आज रात को  
नगर के शिवमन्दिर में  
अकेले ही  
पहुँचो।  
राजा और  
तुम्हारा—  
अविनाशक

??

तो इसका मतलब  
राजा विक्रमसिंह की  
जिन्दगी स्वतरे में  
है। वाह! यह तो  
मेरे लिये शुभ  
सूचना है!...

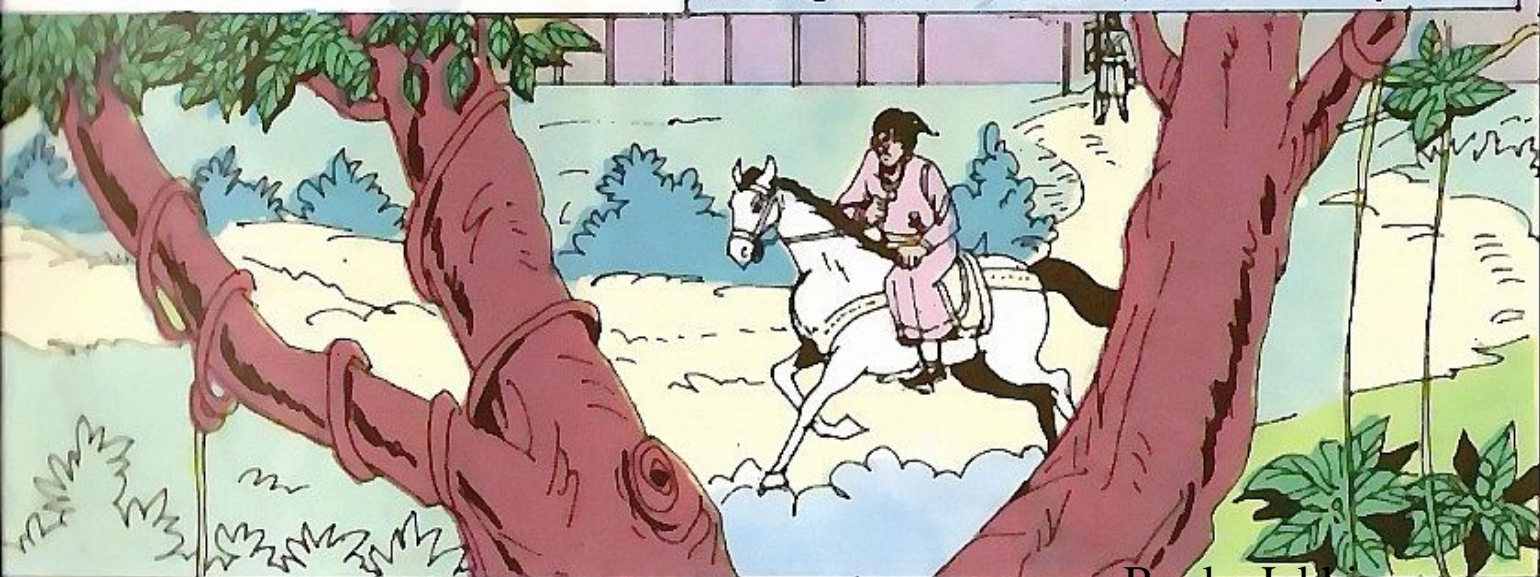
... और इस सन्देश में  
लिखा है कि मैं राजा  
की मदद के लिए पहुँचूँ।  
माझ में जाऊँ राजा। मुझे  
क्या जरूरत है उसकी  
मदद करने की। वह कल  
मरता है तो आज  
मरे, ताकि  
विशालगढ़ का  
राजसिंहासन  
मेरा हो  
सके।

सभी एक विचार बिजली की तरह उसके  
मस्तिष्क में कौंधा—

ये बांकल! तू राजा की मदद करे या न  
करे, लेकिन तुझे इस सन्देशवाहक तक  
पहुँचना ही पड़ेगा, वरना हो सकता है  
कि वह तुझे राजा की मदद के लिये  
पहुँचना न देख किसी अन्य को  
मदद का सन्देश पढ़ा दे, यह  
तेरे हित में नहीं  
होगा...

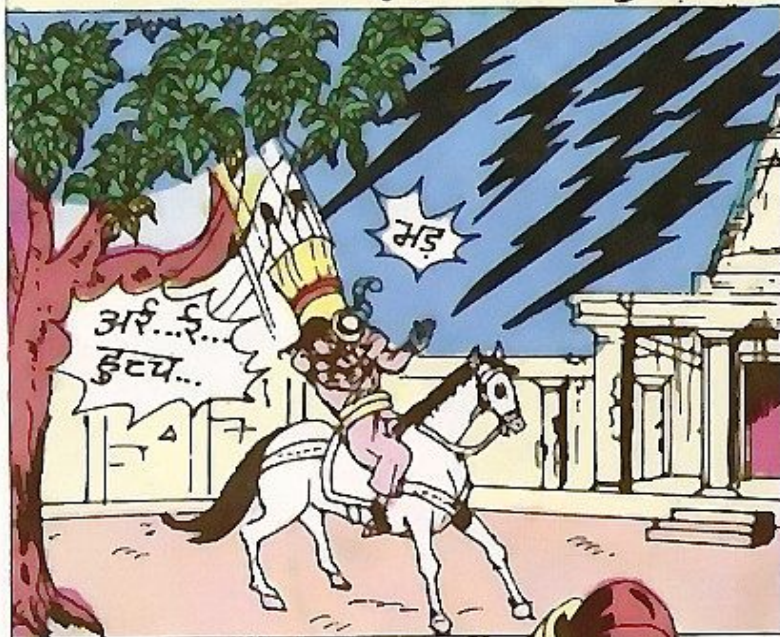
हां, यही ठीक रहेगा। मैं शिवमन्दिर  
तक जरूर जाऊँगा, और मौका  
लगेगा तो उस सन्देशवाहक को ही  
रास्ते से हटा दूँगा ताकि वह  
आगे किसी को न बता  
सके कि राजा की  
जिन्दगी क्यों और  
कैसे स्वतरे में  
है।

फिर छोड़े पर सवार हो बांकलाल नगर  
के बाहर बने शिवमन्दिर की ओर बढ़ चला—





जैसे ही वह शिव मन्दिर के निकट पहुंचा तो-



अगले ही पल-





माले ही पल—

लेकिन तुम्हारे...  
आह !

भड़क

घोघट का रक जोरदार घुंसा  
बांके की खोपड़ी से टकराया  
और वह अपनी चेतना खो बैठा।

फिर बांके की चेतना लौटी तब जबकि—

उफ !

धुपाक

राजा उधमीसिंह...  
म... मेरा मतलब महाराज,  
मेरा कुछूर क्या है  
जो आप मेरे साथ  
ये सलूक कर रहे  
हैं ?

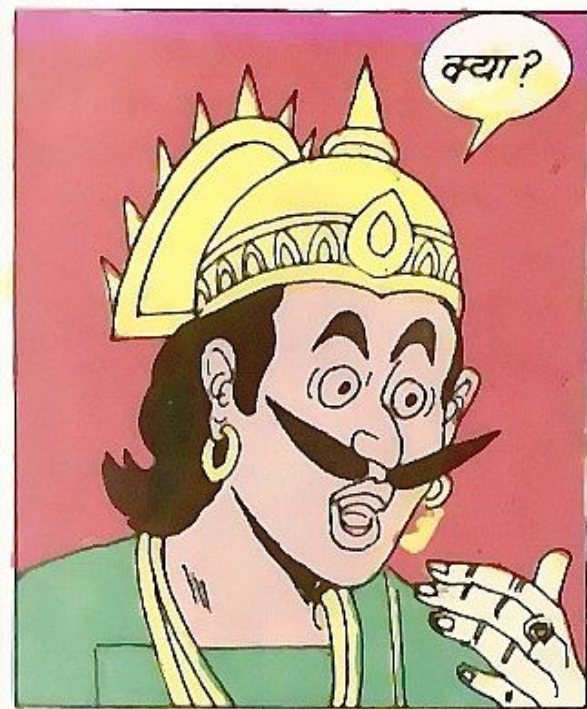
बांकलाल, हम तुमसे प्रतिशोध  
लेंगे। हम तुम्हें बड़ी भयानक  
मौत मारेगें।...

आहा-हा-  
हा-हा !









फिर पूरी योजना सुनने के बाद उधमीसिंह पोपट और चौपट से बोला —



फिर बांकलाल राजा उधमीसिंह को अपनी योजना बताने लगा जिसे सुनते हुए उधमीसिंह की आंखें भयानक अन्दाज में चमकने लगीं।

पोपट और चौपट के जाने के बाद —

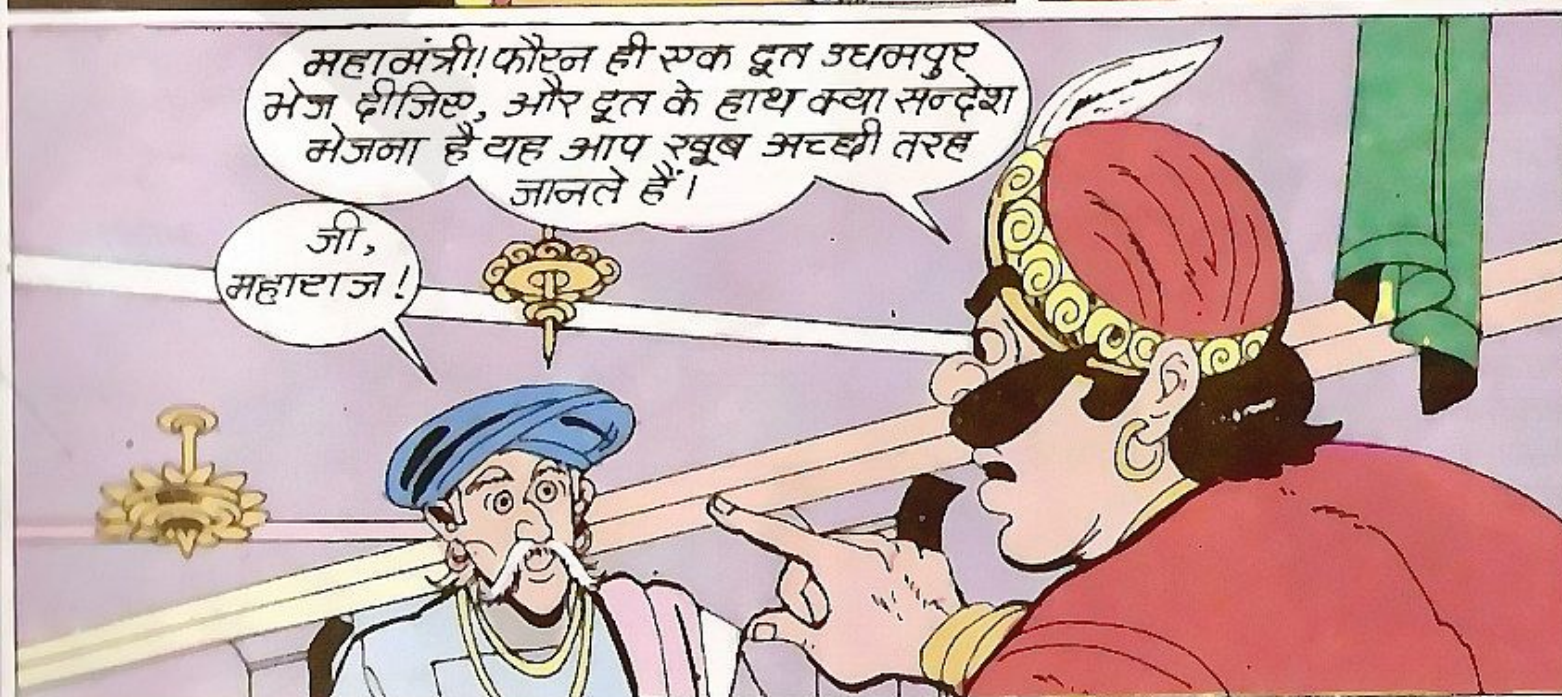




इधर पोपट और चौपट विशालवाढ़ पहुंचकर बांकेलाल की योजनानुसार जगह-जगह प्रचार करने लगे -









और उसी दिन  
शाम तक  
विशालवाढ़  
का राजदूत  
उधमपुर  
पहुंच गया—

महाराज की जय हो। विशालवाढ़  
के राजा विक्रमसिंह का सन्देश है  
कि उनके सुनने में आया है कि  
आपके इशारे पर विशालवाढ़ के  
राज अतिथि  
का अपहरण  
हुआ है...

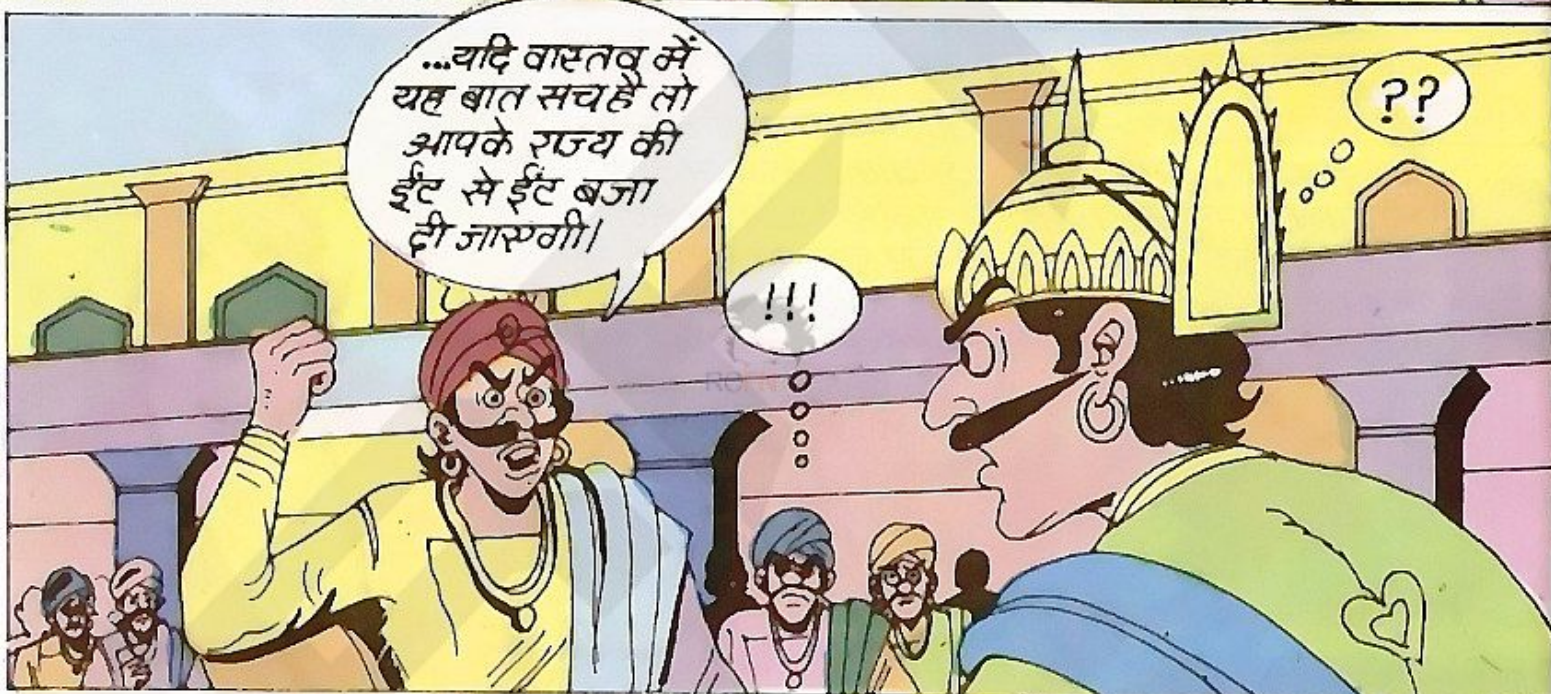
ओह! बांकेलाल  
की योजना का  
प्रथम चरण पूरा  
हो गया है!



...यदि वास्तव में  
यह बात सच है तो  
आपके राज्य की  
ईंट से ईंट बजा  
दी जाएगी।

??

!!!



अगले ही  
पल—

गुस्ताख  
राजदूत! तेरी  
यह मजाल कि  
तुम्हारे दरबार  
में हमारे  
सामने  
इतने ऊँचे  
स्वर में  
बोले...

...सेनापति! इस गुस्ताख  
की गर्दन उतारकर विशालवाढ़  
भिजवा दो।

जो  
आज्ञा  
महाराज!

??





फिर—

महाराज की जय हो। हमारे  
महाराज ने यह जवाब भेजा है  
आपके सन्देश का।

क्या? राजदूत  
की हत्या।

???



राजदूत! हम चाहें तो इसी समय  
तुम्हारी गर्दन काटकर उधमीसिंह  
का जवाब उन्हीं को लौटा दें, लेकिन  
हम जानते हैं राजदूत की हत्या  
पाप है...

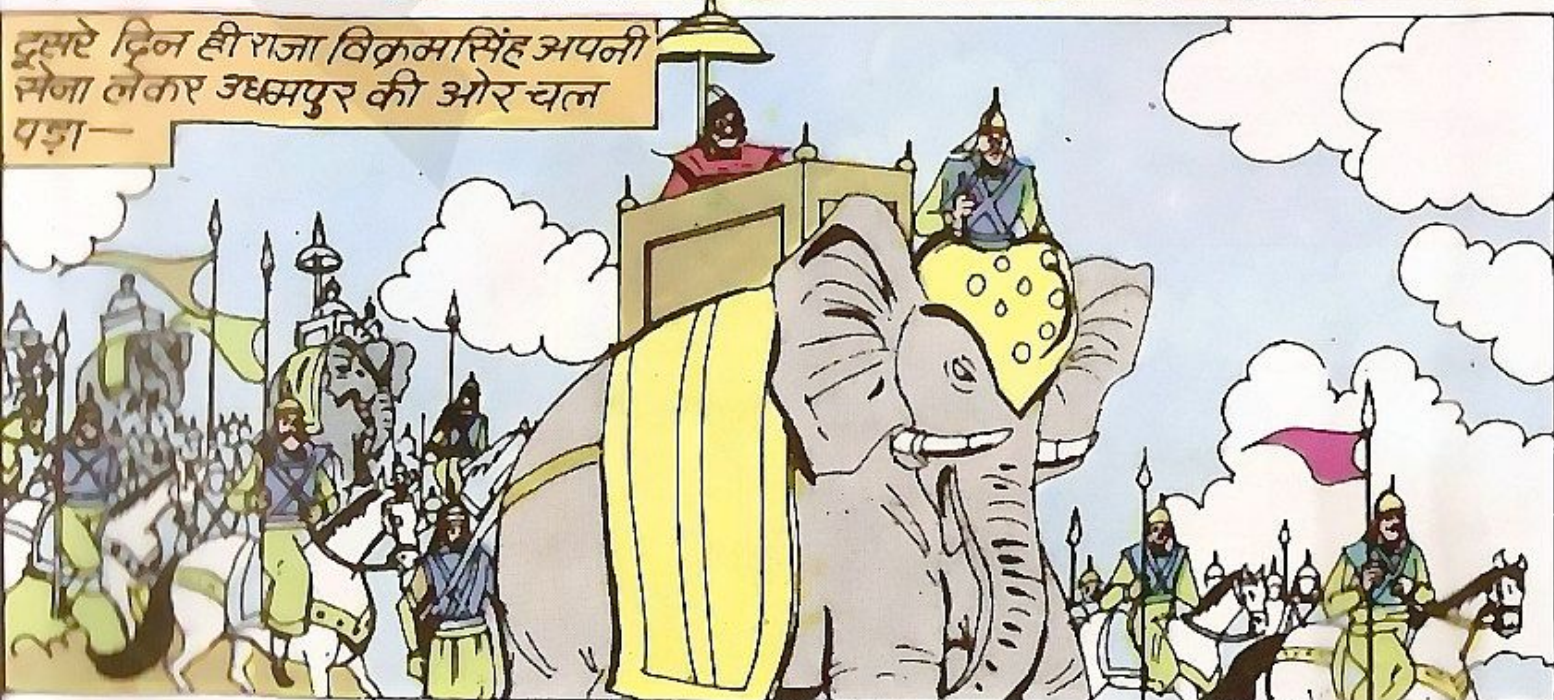


... अतः जाकर उधमीसिंह से  
कहो कि वह युद्ध के लिए  
तैयार हो जाए।



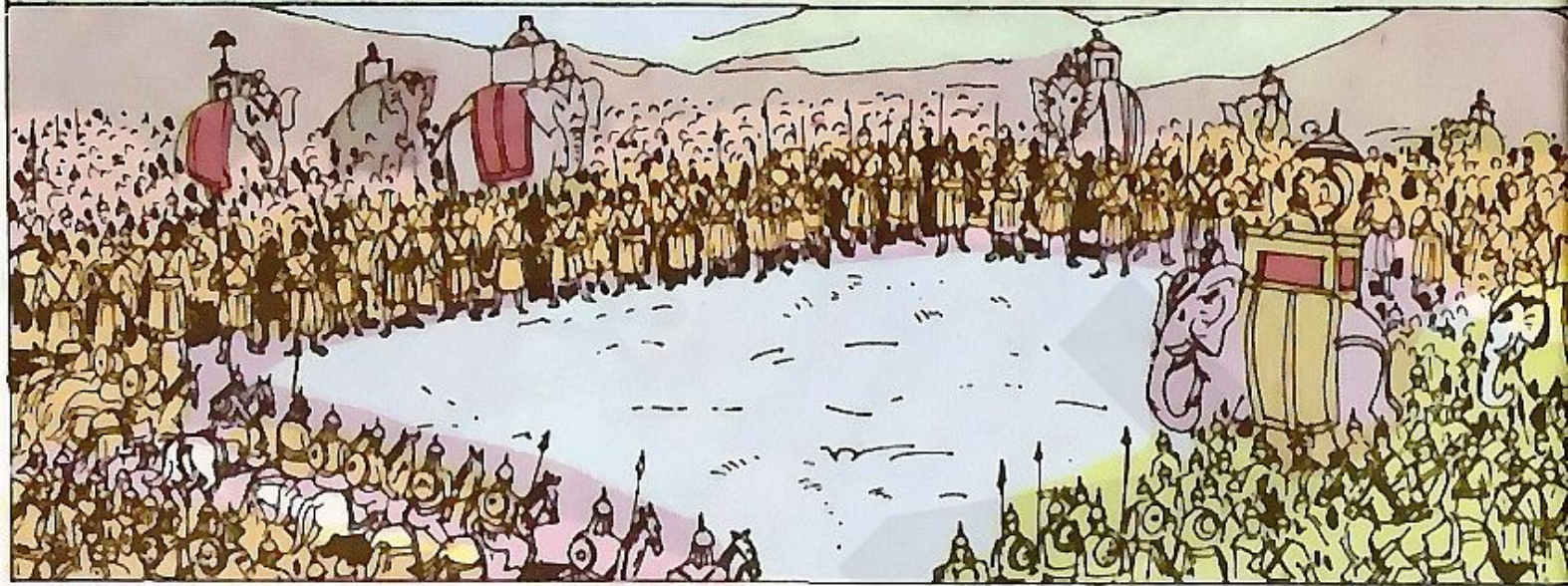
महाराज,  
बड़े दयालु हैं।  
महाराज की  
जय हो।

दूसरे दिन ही राजा विक्रमसिंह अपनी  
सेना लेकर उधमपुर की ओर चल  
पड़ा—





उधमपुर के राजा को तो इसी पल की प्रतीक्षा थी। जैसे ही विक्रमसिंह की सेना युद्ध के मैदान में पहुंची उधमीसिंह की सेना ने सुनियोजित ढंग से उसे तीनों ओर से घेर लिया-

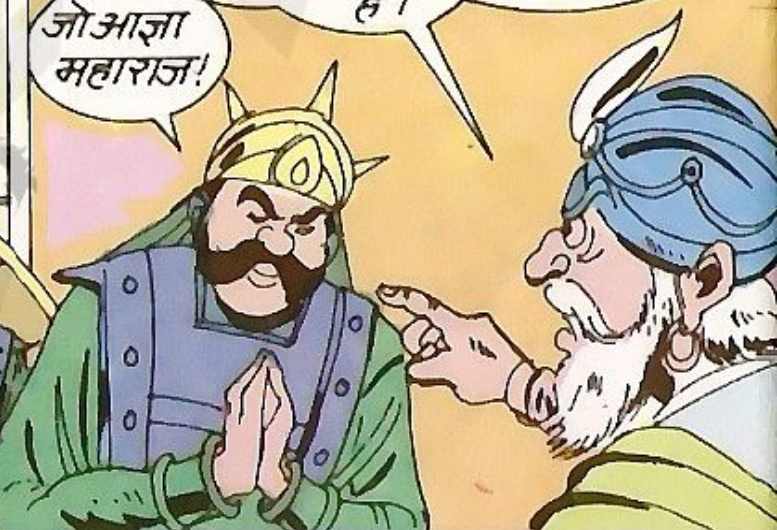


उधर युद्ध की खबर चन्दनगढ़ के राजा चन्दनसिंह तक भी पहुंची - क्या? दामाद-जी ने उधमपुर पर चढ़ाई कर दी, और हमें इस बाल की खबर तक नहीं है।

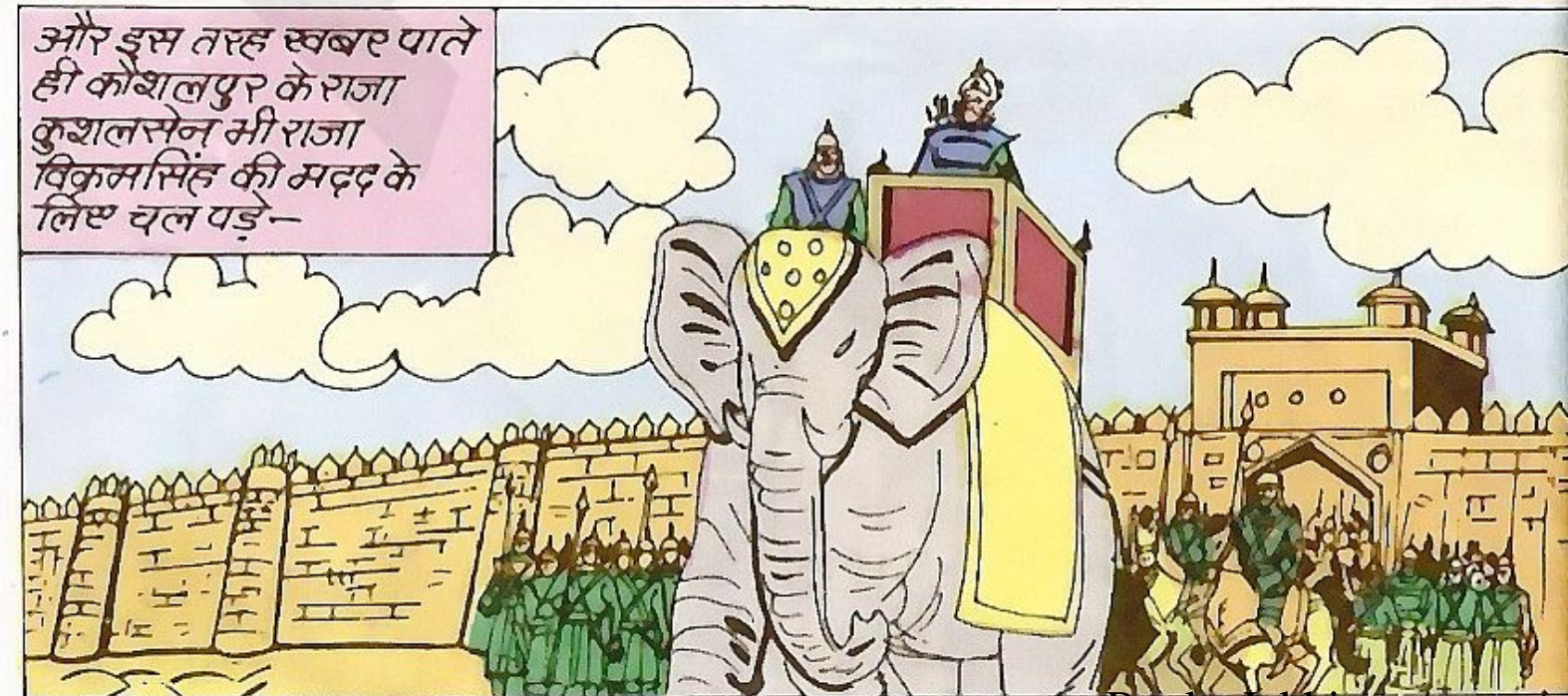


सेनापति, सेना को कूच का आदेश दो। हमें तुरन्त ही दामाद विक्रम की मदद के लिए पहुंचना है।

जो आज्ञा महाराज!



और इस तरह खबर पाते ही कोशलपुर के राजा कुशलसेन भी राजा विक्रमसिंह की मदद के लिए चल पड़े-

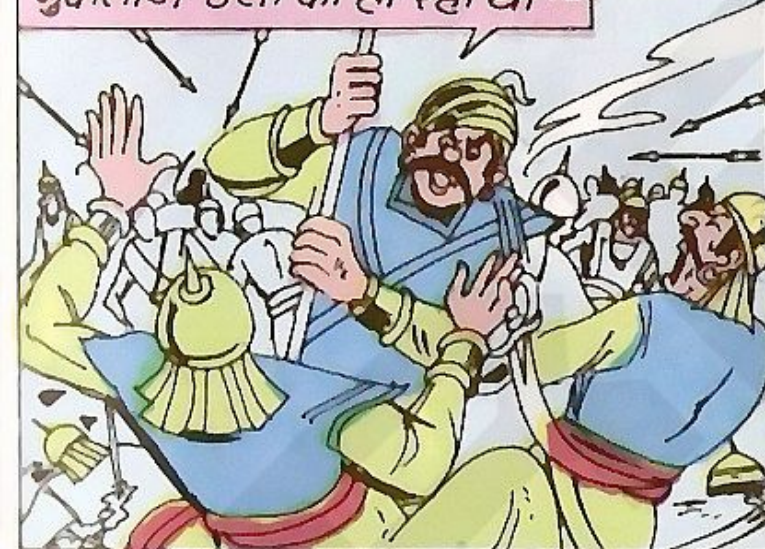




इधर युद्ध के मैदान में भीषण युद्ध छिड़ा हुआ था —



लेकिन चूंकि राजा विक्रमसिंह की सेना तीन तरफ से घिरी हुई थी, अतः युद्ध में ज्यादा नुकसान उसी का हो रहा था —



किन्तु फिर भी विक्रमसिंह पूरी हिम्मत और बहादुरी से युद्ध कर रहा था —



तभी दो अलग दिशाओं से कौशलपुर और चन्द्रनगढ़ की सेनाएं भी उनकी मदद के लिए पहुंच गयीं —





अब उधमपुर की सेना तीन राज्यों की सेनाओं के बीच घिर गयी—

मारो काटो!

मारो!

उफ! अब तो मेरी हार निश्चित ही है...!



फिर जल्दी ही उधमपुर की सेना के पांव उखड़ गये—

ओह! जान बचाकर भाग लेने में ही भलाई है!

भागो!

भागो!



अगले ही पल उधमसिंह मैदान छोड़कर भाग-खड़ा हुआ—

भागो...  
भागो...



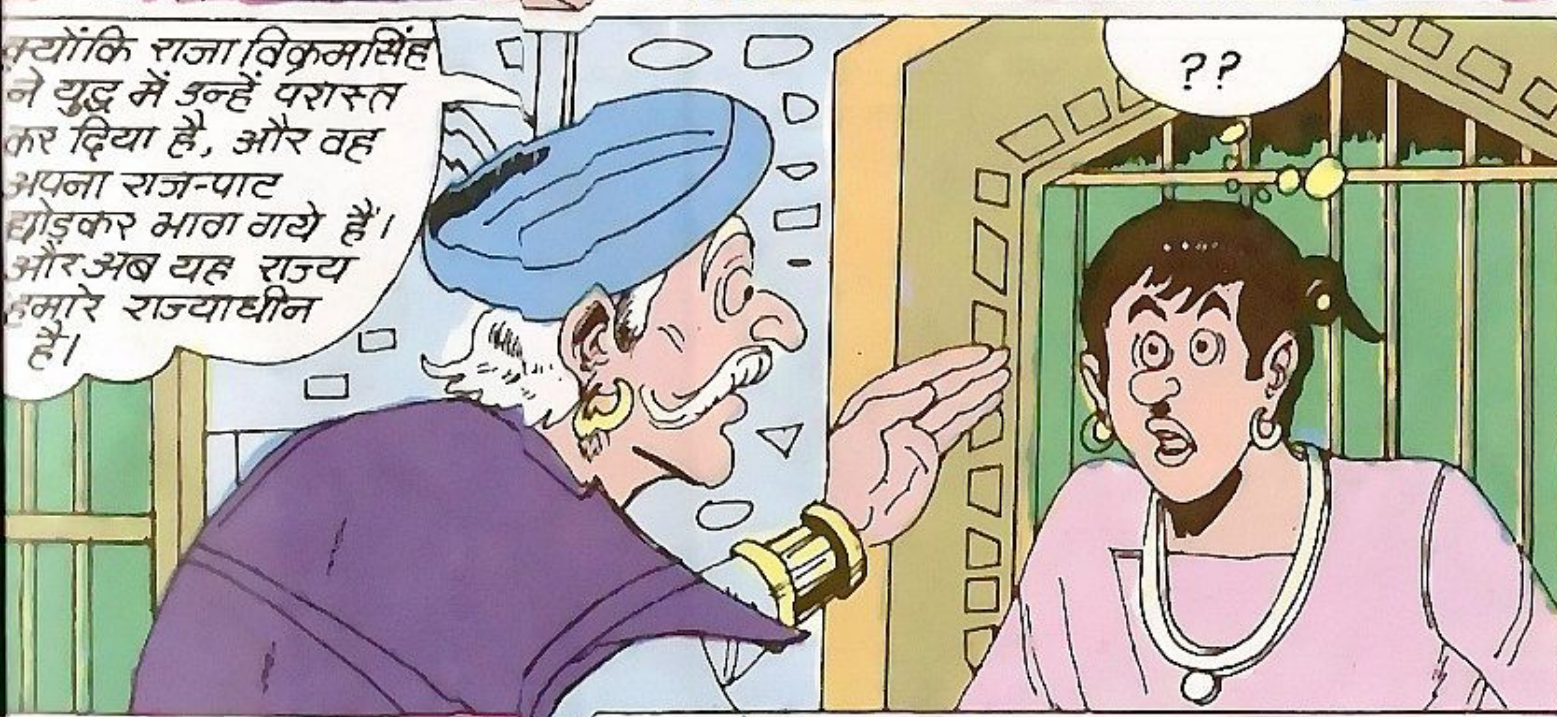
इस तरह उधमपुर के राजमहल में विशाल-गढ़ का झंडा फहराया तब—

महामंत्री, सबसे पहले बाकेलाल की तलाश की जाए। और जल्दी ही कोई शुभ सूचना हमें सुनाई पड़नी चाहिए।

जी, महाराज!









इधर युद्ध के मैदान से भागा राजा उधमीसिंह एक निर्जन जंगल में पहुंचा तो मारे भूख के उसका बुरा हाल था—

उफ! यह मैंने क्या मूर्खता कर दी। वह कौन सी अभुम घड़ी थी जब मैंने राजा विक्रमसिंह से टकराने की सोची थी। हे भगवान्? अब क्या होगा? मैं कहां जाऊं, क्या करूँ?



इसी तरह के कई प्रयत्न मन में लिए वह जंगल में भटक ही रहा था कि तभी—



अरे! इस बियाबान जंगल में इतना शानदार महल! मला किसका महल हो सकता है यह? चलकर देखें शायद यहां पेट भरने के लिए भोजन-पानी की कुछ व्यवस्था हो जाए।

फिर जैसे ही वह महल के मुख्य द्वार पर पहुंचा तो—



???

मेरा नाम उधमीसिंह है, मैं अब से कुछ समय पहले उधमपुर का राजा था, लेकिन...



कौन है तू? और जादूगर डांवा के इलाके में प्रवेश करने की तेरी विस्मय कैसे हुई?



हूं... ठीक है अन्दर चलो!

उधमीसिंह ने अपनी सारी राम कहानी कह सुनाई।



अन्दर ले जाकर जादूगर डांगा ने पहले उधमीसिंह को भोजन कराया—



फिर —

अब बोलो राजन! मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?



जादूगर डांगा, तुम मेरी मदद क्या... हाँ यदि तुम अपनी जादुई शक्ति के बल पर उस कमीने बाकेलाल को यहाँ बुलवा दो तो मैं तुम्हारा सहस्रानुमद दूँगा...



... क्योंकि उस कमीने के कारण ही मुझे अपना राजपाट खोना पड़ा है। उस कमीने को जान से मारने के बाद ही मेरे मन को शान्ति मिलेगी।



ठीक है मैं अभी तुम्हारे वांछित व्यक्ति बाकेलाल को तुम्हारे सामने हाजिर करता हूँ।

फिर जादूगर उसी कमरे के एक कोने में मेज पर पड़ी एक खोपड़ी के पास पहुँचा और वहाँ ही मन कुछ मंत्र बुदबुदाने के बाद बोला —



रे शैतान की खोपड़ी! इस राजा के दिलो-दिमाग पर बसी बाकेलाल नाम के इन्सान की तस्वीर देख और फिर मुझे दिखा, वह इन्सान इस समय कहाँ है, और क्या कर रहा है?

जो हुक्म मेरे आका!







फिर—

उफ! पता नहीं यह सब क्या चक्कर है? मुझे लगा रहा है कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे अपनी ओर खींच रही है।

फिर थोड़ी ही देर बाद—



अगले ही पल—

लीजिए राजन! आपका अपराधी आपके सामने हाजिर है।

मेरा अपराधी... यह तोता? ल... लेकिन...

र... राजा उधमी सिंह!



राजन, यह कोई साधारण तोता नहीं, बल्कि बांकलाल है। जिसे मैंने शक्ति से तोता बनाकर यहाँ बुलाया है...

...देखो, मैं अभी इसके असली रूप में इसे लाता हूँ।

??



फिर जादूगर ने मन ही मन मंत्र पढ़ा तो—

हूँ, औतान की स्तोपड़ी इसे असली रूप में बदल दो।



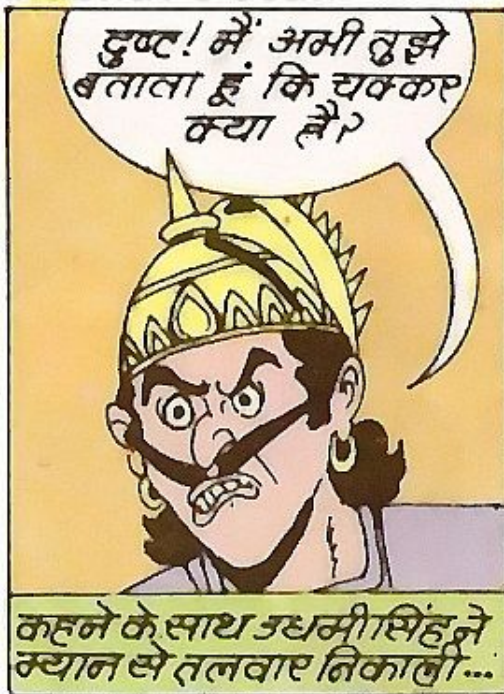
अगले ही पल बांकलाल अपने इंसानी रूप में आ गया—

म...महाराज! यह सब क्या चक्कर है?

बांकलाल! गुर्रह!









...जिसे सुनकर उधमीसिंह की आंखें भयानक अन्दाज में चमकने लगीं—





फिर अधमीसिंह ने आइने में अपनी बदली हुई सूरत देखी और सन्तुष्टि पूर्ण ढंग से सिर झिंकाता हुआ बोला -

हूँ... तो बांकेलाल, अब अपनी योजनानुसार अगला कदम तुम्हें उठाना है।

जी, मैं तैयार हूँ।

और दूसरे दिन सुबह सवेरे ही वह राजा विक्रमसिंह के शयनकक्ष पहुँचा -

आओ, आओ बांकेलाल! सुबह-सवेरे कैसे आना हुआ?

महाराज! मैंने सोचा क्यों न आज सुबह की सैर पर चला जाए।



हां-हां क्यों नहीं, कहते हैं सुबह की सैर से सेहत ठीक रहती है। हम भी तुम्हारे साथ सैर करने चलेंगे।

जी!

वाह! बन गया काम।

फिर बांकेलाल उसी रात उधमपुर के राजमहल में पहुँचा और चुपचाप अपने शयनकक्ष में जाकर सो गया -



फिर दोनों अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर सैर के लिए निकल पड़े -

इस मूर्ख को पता

नहीं कि यह सुबह की सैर के लिए नहीं, बल्कि मौत के मुँह में जा रहा है।



काफी देर घूमने के बाद-

बांकलाल, मेरे रुयाल से काफी सैर हो चुकी है। अब वापस लौटा जाऊँ।

बस महाराज, आगे घना जंगल है, जब इतनी दूर आ ही गये हैं तो क्यों न लगे हाथ शिकार का भी आनन्द लिया जाए?

जैसी तुम्हारी इच्छा बांकलाल!

पहले सैर, फिर शिकार... लगता है इसके पीछे कोई उद्देश्य है बांकलाल का। और यह भी तय है कि बांकलाल जो कुछ भी कर रहा है या करेगा उसमें मेरी ही मलाई होगी।

फिर- अरे! बांकलाल देखो, इस बियाबान जंगल में इतना सुन्दर महल!

हां महाराज! आइये, देखें तो मला इस सुन्दर महल का स्वाामी कौन है।

अगले ही पल-

आश्चर्य है। यह तो हमारे राजमहल से भी सुन्दर व मजबूत है।



फिर जैसे ही उन दोनों ने महल में प्रवेश किया तो —

आओ-आओ!

राजा विक्रमसिंह,

आखिर तुम फंस ही गये न  
बाकेलाल के जाल में!  
हा-हा-हा!

??



बाकेलाल! यह मेरा  
हमशक्ल कौन है?  
और यह सब क्या  
चक्कर है?

यह सारा चक्कर  
हम तुम्हें समझाते  
हैं, विक्रमसिंह!



ये तेरा हमशक्ल और कोई नहीं,  
बल्कि उधमपुर का राजा उधमीसिंह  
है जिसे मैंने अपने मंत्र बल पर  
तेरा हमशक्ल बना दिया  
है...



...और अब हम तुझे मार  
देगे, फिर तुम्हारे रूप में  
तुम्हारी जगह राजा  
उधमीसिंह विशालगढ़  
और उधमपुर के  
राजा होंगे हा-  
हा-हा।

और तुम्हारे  
षडयंत्र में  
बाकेलाल भी  
शामिल है!



महाराज!  
मौके का फायदा  
तो हर इन्सान  
को उठाना ही  
चाहिए ही-ही-  
ही!



















...युद्ध में पराजित होने के बाद उधमीसिंह किसी तरह जादूगर हांगा के पास पहुंचा और फिर उसकी मदद से उसने मुझे तोता बनवाकर मेरा अपहरण करवा दिया...



...तब... यह लो वत्स, इस अमोघ-शस्त्र का वार कभी खाली नहीं जाता, लेकिन यह अस्त्र तुम सिर्फ एक ही बार प्रयोग कर सकते हो।

महादेवी मेरा सिर्फ एक ही दुश्मन है, मुझे इसके दुबारा प्रयोग की जरूरत नहीं पड़ेगी।

...फिर जादूगर के महल पहुंचने पर जब मैंने जाना कि जादूगर अपनी मंत्रविद्या द्वारा किसी भी व्यक्ति को किसी भी रूप में बदल सकता है, तब मैंने आपके दुश्मन उधमीसिंह को आपकी जमाह तपस्वी युवक के हाथों मरवाने के लिए यह योजना बनाई थी।



...लेकिन तोते के रूप में मैं जब जादूगर की तंत्र शक्ति से जादूगर के महल की ओर खिंचा जा रहा था तो रास्ते में...

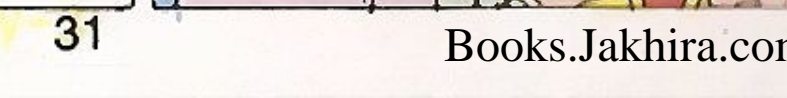
कस, मैं तुम्हारी शक्ति से प्रसन्न हुई। वर मांगो।

महादेवी! यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझे ऐसा अस्त्र दें जिसका वार कभी खाली न जाए और मैं अपने दुश्मन राजा विक्रमसिंह का अंत कर सकूँ।

उफ! तो इसका मतलब मेरे अन्नदाता के प्राण स्वतरे में हैं। कैसे बचाऊं मैं राजा विक्रमसिंह के प्राण?

जी हां, महाराज! आप तो जानते हैं कि मैं सपने में भी आपका बुरा नहीं सोच सकता हूँ।

उफ! बांकलाल, तुम कितने महान इंसान हो। और अज्ञाने में तुम्हें गलत समझकर कितना मला-बुरा कह बैठा।





लेकिन महाराज, आप जादूगर डांगा की कैद से निकलने में कैसे कामयाब हुए?

अरे, उसकी कैद से निकलना मेरे लिये कोई मुश्किल काम साबित नहीं हुआ...



मुझे सन्देह हुआ कि उस जादूगर की जान इस खोपड़ी में है। अवसर पाते ही मैंने उस खोपड़ी पर प्रहार कर दिया। खोपड़ी के दो टुकड़े होते ही सचमुच जादूगर की मर गया और मैं भागकर यहां आ गया।



पूरी कहानी समझ में आते ही दरबार में उपस्थित दरबारी व मंत्रीगण बांकेलाल को प्रशंसात्मक दृष्टि से देखने लगे—

वाह! कितनी बुद्धिमत्ता से बांकेलाल जीने न केवल महाराज की जान बचाई, बल्कि उनके शत्रु को भी हमेशा-हमेशा के लिए उनके रास्ते से हटा दिया।

वाकई! बांकेलाल जी असाधारण बुद्धिमान हैं।



चलो जान तो बची, लेकिन हर बार की तरह किसमत ने फिर मेरे साथ मजाक किया है। काश! मुझे पहले ही पता होता कि कोई राजा...

...विक्रमसिंह की जान के पीछे हाथ धोकर पड़ा है तो, मैं कतई कोई योजना न बनाता।

